स्व. मोहनलाल बांठिया स्मृति ग्रन्थ

फोल्डर नं.	०१२०५९
ग्रन्थ	स्व. मोहनलाल बांठिया स्मृति ग्रन्थ
सम्पादक	केवलचन्द नाहटा
अंग्रेजी वर्झन	सत्यरन्जन बेनर्जी
प्रकाशक	जैन दर्शन समिति – कलकत्ता
आवृत्ति	१
प्रकाशन वर्ष	१९९८
पृष्ठ	४१०

मुख्य टाईटल
समर्पण
संदेश
दो शब्द
Editorial
बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी स्व. मोहनलालजी बांठिया – केवलचन्द नाहटा प्रबन्ध सम्पादक
अनुक्रम
समीक्षा
वर्धमान जीवनकोष (प्रथम खण्ड)
युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी ---------- ४
डा. ज्योतिप्रसाद जैन ---------- ५
डा. नेमीचन्द जैन ---------- ५
मुनिश्री लालचन्द (श्रमण संघीय) ---------- ५
कन्हैयालाल सेठिया ---------- ५
अखिल भारतीय प्राच्य विधा सम्मेलन, ३१ वें अधिवेशन में प्राकृत एवं जैन विधा विभाग – अध्यक्षीय भाषण ---------- ६
डा. भागचन्द जैन ---------- ६
बच्छराज संचेती ---------- ६
भंवर लाल नाहटा ---------- ७
मंगल प्रकाश मेहता ---------- ७
डा. नरेन्द्र भाणावत ---------- ७
कस्तूरचन्द ललवानी---------- ७
भंवरलाल जैन, न्यायतीर्थ ----------८

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कंवर साहब मानसिंहजी--८
रतन लाल डोशी --८
श्रीचंद नाहटा --८
मंगलदेव शास्त्री -- ९
यशपाल जैन -- ९
केवलचन्द नाहटा -- ९
मुनिश्री महेन्द्र कुमार -- १०
वर्धमान जीवनकोष (द्वितीय खण्ड)
मुनीश्री जसकरण, सुजान --१३
मानकमल लोढा --१३
डा. ज्योतिप्रसाद जैन -- १४
साध्वीश्री यशोधरा -- १५
मुनि चन्द्रप्रभासागर -- १५
प्रोफेसर सत्यरंजन बनर्जी -- १६
मिथ्यात्वी का अध्यात्मिक विकास
ज्योतिप्रसाद जैन --२१
कस्तूरचन्द ललवानी-- २९
जब्बरलाल भंडारी -- २९
सुरजमल सुराणा -- २९
रामसूरी डेलावाला-- २९
डा. राजाराम जैन-- ३०
जिनेश मुनि -- ३०
दलसुख मालवणिया -- ३०
मुनिश्री जसकरण -- ३०
डा. दामोदर शास्त्री --३१
मुनिश्री राकेशकुमार --३१
भंवरलाल जैन, न्यायतीर्थ --३१
डा. नरेन्द्र भाणावत -- ३२
डा. भागचन्द्र जैन -- ३२
डा. ज्योतिप्रसाद जैन -- ३२
ग्लोरी ऑफ ईण्डिया -- ३२
मुनिश्री महेन्द्र कुमार -- ३३
प्रोफेसर हीरालाल रसिकदास कापाडिया -- ३४
लेश्या – कोश
डा. नेमीचन्द जैन -- ३७

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डा. पुष्पलता जैन -- ३९
प्रज्ञाचक्षु पं. सुखलालजी संघवी --- ३९
डा. ए. एन उपाध्याय --- ४०
डा. पी. एल. वैध -- ४०
डा. सुनीति कुमार चटर्जी -- ४१
डा. प्रोफेसर एल. अलडर्फ --- ४२
प्रोफेसर डा. के. एल जेनर्ट -- ४२
क्रिया कोश
श्रीचंद चोरडिया-- ४५
उपाध्याय अमर मुनि -- ५२
श्रमण पत्रिका जमनालाल जैन --- ५३
भंवरलाल नाहटा -- ५३
पं. चन्द्रभूषणमणि त्रिपाठी --- ५३
डा. नेमिचन्द जैन --- ५४
प्रज्ञाचक्षु पं. सुखलालजी संघवी -- ५५
डा. आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्याय --- ५५
डा. पी. एल. वैध --- ५६
प्रोफेसर हीरालाल रसिकदास कापाडिया -- ५६
योग कोश (प्रथम खण्ड)
सम्पादक --- ५९
डा. विशाल मुनि -- ६०
मुनिश्री सुमतिचन्द -- ६०
हीरालाल सुराणा --- ६०
जीवन वृत
जैन आगम के जागरुक प्रहरी – मांगीलाल लुनिया --- ६१
पू. काकासा मोहनलालजी बांठिया – हजारीमल बांठिया -- ६६
Father – The Mentor – डा. अजितकुमार बांठिया --- ६९
एक निःस्पृह,सत्यनिष्ठ,कर्मठ एवं विधावदात व्यक्तित्व – डा. छगनलाल शास्त्री----------------- ७१
निस्वार्थ साहित्य साधक – डा. ज्योतिप्रकाश जैन --- ७६
मेरी स्मृति में बाऊजी – चन्द्रलेखा जैन ---८१
महामना पिताश्री – चित्रलेखा भंसाली --- ८४
श्रद्धा सुमन
बहुमुखी प्रतिभा के धनी – कन्हैयालाल सेठिया -- ८७
स्थित प्रज्ञ – प्रो. कल्याणमल लोढा-- ८८
मननशील व कर्मठ व्यक्तित्व – श्रीचन्द रामपुरिया --- ८९

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहायामी कृतित्व के धनी – रतनलाल रामपुरिया -- ९०
प्रमुख तत्त्ववेत्ता – सोहनराज कोठारी -- ९१
समन्वय के प्रतिक – सोहनलाल दूगड -- ९२
कर्तव्यनिष्ठ नेता – अणुव्रती मोहनलाल जैन -- ९३
स्पस्ट वक्ता – रतन कुमार गधईया --- ९५
उदारचेता मनीषी – श्रीचन्द चोरडिया --- ९६
कर्मवीर व्यक्ति – हनुतमल बांठिया --- ९७
प्रेरक प्रसून
कर्मठ पुरुष – नथमल कठोतिया --- ९९
समर्पित साधक – राणमलजी जीरावाला -- १००
गहन चिन्तक – मानसिंह बैद -- १००
धर्मनिष्ठ श्रावक – मन्नालाल सुराणा --- १०१
कुशल न्यायविद – पारस नाहर -- १०१
निस्वार्थ साहित्यसेवी – उत्तमचन्द सेठिया --- १०२
प्रतिभा के धनी – भंवरलाल डागलिया --- १०२
स्पष्टवादी व्यक्तित्व – मुनिचन्द भण्डारी -- १०३
देदीप्यमान व्यक्तित्व – गनेशमल चिन्डालिया-- १०३
संस्थाओ के प्राण – सार्दूल सिंह जैन --- १०४
ज्ञान के धनी – श्रीचन्द नाहटा -- १०५
कुशल मार्गदर्शक – रावतमल बांठिया -- १०५
देदीप्यमान नक्षत्र – धर्मचन्द राखेचा --- १०६
बडे दूरदर्शी – विजय सिंह नाहर --- १०७
योग्य निर्देशक – बच्छराज सेठिया --- १०७
स्मृति का शतदल
कुशल परामर्शक – मंगलचन्द लूंकड -- १०९
युगपुरष स्व. मोहनलालजी बांठिया – कन्हैयालाल दूगड--------------------------------११३
कार्यकर्त्ताओं के प्राण – हीरालाल सुराणा -- ११६
जीवन्त व्यक्तित्व के धनी – देवेन्द्र कुमार हिरण -------------------------------------- ११९
कर्मशील व्यक्तित्व के धनी – देवेन्द्रकुमार कर्णावट -----------------------------------१२१
एक प्रज्ञा पुरुष – आचार्यश्री नगराजजी -- १२३
मंगल मूर्ति पूज्य काकाजी मोहनलाल बांठिया – प्रताप सिंह बैद --------------------------- १२५
अपरिमेय व्यक्तित्व – बच्छराज संचेती -- १२७
विद्वान एवं समाज सेवी – सूर्यप्रकाश भंसाली -- १२९
श्री मोहनलालजी बांठिया के प्रति – साध्वीश्री जयश्रीजी -------------------------------------१३१
एक चमत्कार दृश्यावलोकन – श्रीचंद चोरडिया--- १३३

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूरद्रष्टा एवं दृढ संकल्पी – श्रमण सागर -- १३४

दर्शन – दिग्दर्शन

स्वास्थ्य के मन्त्रदाता भगवान महावीर – गणाधिपति तुलसी-------------------------------- १३७

विचार की समस्या कैसे सुलझे – आचार्य महाप्रज्ञ --- १४३

तवेसु वा जन्म बंभचेरं – महाश्रमण मुदित कुमार -- १५२

भगवान महावीर का व्यवहारिक दृष्टिकोण – साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ------------------------- १५८

ममत्व – विसर्जनः अपरिग्रह – महाश्रमण मुदित कुमार ------------------------------------- १७०

मनःपर्यव ज्ञान भी सम्भव है – मुनि गुलाबचन्द्र --- १७५

जागना है तो अभी जागो – साध्वी राजीमती -- १७९

मोक्षधर्म और व्यवस्था धर्म – मुनि सुखलाल--- १८२

षडजीव निकाय – सुरक्षा ही पर्यावरण सुरक्षा – मुनि धर्मचन्द ------------------------------- १८५

तपः जीवन शोधन की प्रक्रिया – मुनि श्रीचन्द --- १९१

श्रावकत्व का सुरक्षा क्वच – साध्वी कल्पलता -- १९६

जीवन की प्रयोगशाला के प्रेरक प्रयोग – साध्वी अणिमाश्री ---------------------------------- २०३

जैन धर्म में वैज्ञानिकता के तत्त्व – डा. नंदलाल जैन -- २०९

आगमों में सूक्ष्म जीवों की वैज्ञानिक व्याख्या – चन्दनराज मेहता ---------------------------- २१९

आचारांग के कुछ महत्वपूर्ण सूत्र एक विश्लेषण – डा. सुरेन्द्र वर्मा ---------------------------- २२२

जैन नास्तिक नहीं है – देवेन्द्र कुमार जैन --- २३३

आगमिक शब्दावलि और उसकी पारिभाषिकता – डा. महेन्द्रसागर प्रचंडिया ------------------ २४०

भगवान महावीर के समसामायिक महापुरष – सोहनराज कोठारी ---------------------------- २४८

अवधिज्ञान - भंवरलाल नाहटा --- २५५

भगवान महावीर के समसामायिक श्रमण धर्मनायक एवं उनके सिद्धान्त – सोहनराज कोठारी-- २६९

उपासना करो – मुक्त भावों से – नवरतनमल सुराणा--------------------------------------- २७७

क्यो है अतिक्रमण का आतंक – शंकरलाल मेहता -- २७९

भगवान महावीर वीतराग व्यक्तित्व – डा. हुकमचन्द भारिल्ल -------------------------------- २८४

भारत के षट दर्शन व उनके प्रणेता – श्री सोहनराज कोठारी --------------------------------- २९०

The Jain Conception of liberation in the sutrakrtanga – Dr. CH. Lalitha ------------------- 303

Recent Jain discoveries in Tamil Nadu – Dr. A Ekambaranathan --------------------------- 314

Contribution of prakrit to jain canonical literature – Dr. N. Vasupal------------------------- 325

Jaina agamic literature importance of right knowledge – Dr. Duli Chand Jain ----------- 334

Sauraseni and other prakrits in the Bhagavati Aradhana – Dr. Jagat Ram Bhattacharyya --- 351

Bhartrhari's critism in Jain logic – Dr. Narendra Kumar Dash-------------------------- 360-368

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org